हाल्डेन—तो महाशय ! यह उसके निमित्त बहुत है, हमलोग उसे विशेष नहीं तो तीन दिवस लों तो अवश्यही जीवित रख सकेंगे ; परन्तु आप यह तो बतलाइये कि भागने की कौन सी राह स्थिर की है ?

सर विल्फ्रेड—अभी वह समय नहीं आया कि जिस्में मैं अपनी तदबीर बताऊं। सब से पहले, तो मुझे कप्तान जोली से एक बड़ाही आवश्यकीय काम करना है । और हां हाल्डेन ! यह तो बताओ कि इन तीन दिनों में कितने जंगली यह, हमलोगों की कोठरी में रहेंगे ?

हाल्डेन—केवल यही दो जिनके पास कि बन्दूकें हैं, हाँ इनके अतिरिक्त कुछ तो बरामदा और कुछ सीढ़ी पर भी अवश्य होंगे।

"भला वह देवनां कहाँ रहती है जिसने कप्तान जोली को फँसा रखा है ?" सर विल्फ्रेड का यह दूसरा प्रश्न था।

हाल्डेन—हागाय ; इस जाति के एक श्रेष्ट पुरुष की स्त्री थी इसलिये वह शाही महल के नीचे सिंहों के कमरे के दाहिने ओर रहती है।

सर विल्फ्रेड—अच्छा अब यह बताओ, कि वह दरवाजा जो सिहों क कमरे का है ;—कैसा ? और किस वस्तु का बना है ?

हाल्डेन—यह केवल पत्थर के टुकड़ों का बनाया गया है परन्तु वह बहुत शीघ्र तथा सरलतापूर्वक घूम फिर सक्ता है।

इस्के उपरान्त सर विल्फ्रेड ने एक पेनसिल और एक कागज का टुकड़ा जिसे उन्हेंने अपने रोजनामचे में से फाड़ लिया था निकाला और उस्पर कुछ सतरें लिखकर हाल्डेन के हाथ में दे दिया।

सर विल्फ्रेड—भला इसे तुम कप्तान जोली के पास किसी प्रकार भेज सक्ते हो? साथही रुक्का ले जानेवाला यह पिनसिल भी लेता जावै और कप्तान से उसी समय उत्तर ले ले! हमलोगों का सब मनसूबा केवल इसी के उत्तर पर निर्भर है।

हाल्डेन—अभी मैं इसे भेजता हूं इस्का भेजा जाना कुछ असम्भव नहीं है।

यह कह कर हाल्डेन ने वह पिनसिल तथा कागज शाही गारद के जवानों में से एक को दे दिया और उस्से कुछ बातें कह दीं जिसे सुनकर वह तुरन्त कमरे के बाहर चला गया।

हाल्डेन—वह आपके इस रुक्के को कोई जन्त्र समझता है। उत्तर बहुत शीघ्र लावेगा।

छत्तीसवाँ बयान।

राल्फ हाल्डेन जब अपनी बात समाप्त कर चुके तो वह जङ्गली अपने जाने से १५ मिनिट के उपरान्त लौटकर पिनसिल कागज सहित आया, और उत्तर सर विल्फ्रेड के हाथ में दे दिया, जिस्पर उन्होंने बड़ीही गम्भीरता से दृष्टि डाली, और फिर उसे पढ़कर कहने लगे "अब सब दुरुस्त है"

इस्के उपरान्त ये लोग उस रोगी की चारपाई के निकट जमा हुये जो अपनीही करतूतों से प्यारी दुनिया को "विदा" कह रहा था।

उन दोनों शाही गार्ड के अतिरिक्त और कोई भी कमरे में न था, हां वही दोनों दीवार से सहारा लगाये और कुछ अपने हथियार पर आगे झुके हुये इन लोगों की ओर एक आश्चर्य युक्त दृष्टि से देख रहे थे।

सर विल्फ्रेड—हमारे भागने के मैदान का वह भाग जो एक जगह से खंडित हो गया था अब फिर ठीक हो गया, और अब मैं आप लोगों की कृपा से उस मैदान को पूरा पाकर अपने मनसूबे का एक २ शब्द कह सुनाता हूं।

"पहली बात हमलोगों को यह करना चाहिये कि इस बगलवाली कोठरी पर जिस्में से सिंहों का आखेट गिराया जाता है, इस बहाने से अधिकार कर लें कि हमलोग राजा के प्राणरक्षा के निमित्त उस्में एक मन्त्र जगावेंगे। फिर इस्के उपरान्त वह फिलिप की रस्सियों की सीढ़ी, जो उस्के फतुही और कोट के नीचे लपटी हुई है हमें बहुत कुछ सहायता देगी, और उन खाली बोतलों से भी एक बड़ा भारी काम निकलेगा उस्से मैं गोले तैयार करूंगा और वह इस प्रकार से कि जो कारतूस मेरे पास हैं उन्हें तोड़कर उनकी बारूद बोतलों में भरूंगा। और फिर उनके मुंह पर कड़ा डाट लगाकर उस्में एक पलीता लगादूंगा चलिये बम के गोले तैयार हो गये

और आशा है कि जब ये आग लगाकर फेंके जाँयगे तो पृथ्वी तक जाने के पहिले कदापि न फूटेंगे। इस्में भी कोई सन्देह नहीं कि हम शाह लागोस को तीन दिवस लों जीवित रख सकेंगे और इतनेही काल में हमारी यह सब बस्तु प्रस्तुत हो जाँयगी। और फिर इस्के उपरान्त हमें एक विशेष समय भी भागने का मिलेगा कारण यह कि तीसरे दिन नगर के कुल देव महल के सामने अपने राजा को आरोग्य या हमलोगों की मृत्यु देखने के निमित्त उपस्थित होंगे। और जब वह समय आ जावेगा तो मैं एक विशेष चिन्ह कप्तान को भेजूंगा—जिसने मुझे लिखा है कि मैं स्वतन्त्रापूर्वक अपने मकान से निकल कर शाही महल के पीछे आ सक्ता हूं—अस्तु! शाही गारद का एक जवान तो रुक्का लेकर जायगा और दूसरा यहाँ अकेला रह जायगा जिसे हमलोग उसी समय अपने हाथ में करलेंगे और मारकर या बेहोश करके उसे एक ओर डाल देंगे। इस्के दस मिनिट उपरान्त या जब हो, कप्तान जब वह रुक्का पायेगा तो अवश्यही अपने को महल के पीछेवाले मैदान में पहुँचायेगा, जिस्के सामने अवश्यही सब राक्षस राजा के निमित्त जमा होंगे बस यह देख के कप्तान उसी समय सिंहों के कमरे के द्वार को जो उसी मैदान के सामने है खोलकर उसी के पीछे छिपकर खड़ा हो जावेगा। इधर जब वह गारद का दूसरा सिपाही लौटकर आयेगा तो उसे भी हमलोग तुरन्त अपने हाथ में कर लेंगे। और फिर इस्में से एक सिंहों के उस ऊपरवाले

छेद से, रस्सी की सीढ़ी लटकाकर उतर जावेगा और समय की प्रतीक्षा करता रहेगा, जैसेही कप्तान उस्का द्वार खोलें वैसेही वह दियासलाई बम के गोलों में लगाकर सिंहों में फेंक दें। निस्सन्देह वह भयानक शब्द सिंहों को, खुले द्वार की ओर भगावेगा और वहाँ से वे देवों पर जा टूटेंगे।

सिंहों के बाहर निकलतेही हम सब उसी रस्सी से नीचे उतर जावेंगे जहाँ कप्तान भी हमें मिलजायगा अब यहाँ से हमलोग बगीचे से होते हुये उस चोर दरवाजे से बाहर निकलेंगे जिस्का ब्योरा तुम्हीं ने हमसे बतलाया है। चोर दरवाजे से निकलतेही हम उस सड़क पर आगे बढ़ेंगे जो नदी की ओर जाती है और उसी के किनारे २ नगर के फाटक से बाहर होंगें और फिर वहाँ से मृत्यु की गुफा में पहुँचते क्या देर लगती है। मृत्यु की गुफा में पहुँचने पर यदि देवों का आक्रमण हमपर होगा तो हम इन दोनों बन्दूकों से अपनी रक्षा करेंगे और फिर पीछे हटते हुये इन तदबीरों से हमलोग इस कठिन जञ्जाल से छुटकारा पावेंगे।

फिलिप तथा राल्फ हाल्डेन ने बड़ीही गम्भीरता से इस मनसूबे को सुना। फिर इस्के उपरान्त फिलिप कहने लगा।

फिलिप—आपके मनसूबे का कहनाही क्या है परन्तु ईश्वर जो कृतकार्य करे !

हाल्डेन—यह सब कप्तान जोली पर निर्भर है यदि हम में से

कोई बम का गोला तक लेके नीचे गया, और कप्तान ने द्वार न खोला तो सब बातें बेकाम ठहरेंगी।

सर विल्फ्रेड—यथार्थ में बात तो ऐसीही कुछ है परन्तु मेरा साहसी मित्र कभी ऐसे समय को हाथ से जाने न देगा।

फिलिप—और हाँ आप यह तो भूलही गये कि कप्तान साहब ने गुफा के भीतर का जो पुल तोड़ दिया है उस्का क्या होगा?

सर विल्फ्रेड—उसे मैं बहुतही शीघ्र तैयार करलूंगा। अच्छा हाल्डेन! अब अपने राक्षस मित्रों को उस कोठरी के खोलने के लिये कहो तबसे मैं शाह लागोस को देखता हूं।

शाह की अवस्था कलही कीसी थी। वह एक सन्नाटे में था बोलने की सामथ उस्में बिलकुल न थी। वह एकही करवट पड़ा हुआ था उस्के नेत्र अधखुले रह गये थे। बस अब एक बाल बराबर भी उस्की अवस्था वर्तमान अवस्था से खराब हुई तो निसन्देह फिर इन गरीब पथिकों के प्राणों पर आ बीतेगी। शाह को देखने के उपरान्त सर विल्फ्रेड ने टौंक से अपने मनसूबे को भली भाँति समझा दिया परन्तु वह जङ्गली मनुष्य कुछ तो समझ गया और बाकी के निमित्त योंही गरदन हिला दी।

इतनी देर में राल्फ हाल्डेन ने भी उन देवों को भली भाँति पट्टी पढ़ा दी जिसे उन्होंने तुरन्त स्वीकार करके उस कोठरी का द्वार जो एक बड़ी शिला से दबा हुवा था खोल दिया।

कोठरी के भीतर बड़ाही अन्धकार था इसलिये उनमें से एकने एक बड़ा भद्दा और धुवाँदार दीया लाकर एक कोने में रख दिया। अब सब स्थिर होगया, हाल्डेन तथा फिलिप तो शाह के निकट बैठे और सर विल्फ्रेड टौंक को लेकर कोठरी में चले गये और दरवाजा बन्द करके अपने काम में लगे।

यह कार्य बड़ाही कठिन था। पहले तो ये कारतूसों को बहुतही धीरे २ छूरी से खोल कर उस्में की बारूद बाहर निकालते थे। यह बारूद कुछ टूटी हूई बोतलों में जो उसी सन्दूक में से निकली थीं रक्खी जाती थी। और जब एक पूरे हद्द तक बारूद जमा हो जाती तो उसे बोतल में भरना प्रारम्भ करते और भली भाँति भर कर फटी वरदी का दृढ़ डाट बोतल पर लगादेते इस डाट में भी पलीता लगाते, जो पहलेही से बनाकर तैयार कर लिया गया था।

दिन भर टौंक और अर्ल (राजा) इसकाम में लगे रहे। हाँ बीच २ में आकर सर विल्फ्रेड, शाह लागोस और उस्के गार्ड को देख जाते थे। इसी प्रकार काम करने में सन्ध्या पर्यन्त सात बम के गोले तैयार हो गये और अब दिन भर में ये लोग थक भी गये थे इसलिये बाकी का काम दूसरे दिन पर उठा रक्खा गया। अब इसतरह सर विल्फ्रेड की प्रत्येक बातें उनकी इच्छानुसारही होती चलीं परन्तु वे हेक्टर और उस्के बुरे भाग्य के निमित्त बड़ेही दुखी थे उन्होंने बीच २ में फिर भी राल्फ से उस्के बारे में प्रश्न किये परन्तु उस प्रश्न के उत्तर कुछ ऐसे मिले कि जिनसे इनकी आशायें टूटतीही गईं।

यह रात बडीही भयानक थी सबके सब शाह के रोग की ओर से भयभीत थे। परन्तु सर विल्फ्रेड के उत्तम प्रबन्ध ने थोड़ा २ सबको विश्राम लेने दिया और वे बारी २ शाह के पास बैठते और ब्राण्डी के बून्दों से उस्के जीवन के बुझते हुये दीपक को घडी २ उस्का देते।

नारायण २ करके प्रातः काल हुवा और उस्की मुस्कराती हुई सुफेदी ने इनलोगों के चित्त को बड़ाही प्रसन्न किया। कुछ ही देर के उपरान्त उत्तमोत्तम भोजन कैदियों के निमित्त लाये गये जिसे इनलोगों ने इच्छापूर्वक खूब पेट भर कर खाया। इसके उपरान्तही बम के गोलों में पुनः हाथ लगाया गया और दिन के २ बजते २ ये १४ तैयार हो गये और अब इनकी गिनती, सर विल्फ्रेड का काम पूरा करने निमित्त बहुत हो गई।

सर विल्फ्रेड की दियासलाई भीगने के कारण कुछ निकम्मी हो गई थी इसालिये उन्हें कमरे में फैला दिया जिस्से वह तुरन्त सूखकर काम के योग्य हो गई। इतने में इनलोगों को एक भयानक रव सुन पड़ा और जब इस्पर ध्यान दिया गया तो जान पड़ा कि यह सिंहों की गरज है जो निचे की कोठरी से आती है। सर विल्फ्रेड ने परीक्षार्थ उस छेद पर के पत्थर को कई बार हटाया और रक्खा जिस्से इन्हें इस ओर से भी संतोष हो गया।

इस्के उपरान्त ये लोग शाह के पास गये जिस्की अवस्था यथार्थ में उस दिन बड़ीही रद्दी हो गई थी परन्तु ब्रांडी के

बून्दों से उस्के चेहरे पर लालिमा आ गई थी और जिसे देख कर गारद के सिपाही उस्के जीने की आशा कर रहे थे तो भी सर विल्फ्रेड और राल्फ बड़ेही भयभीत हो रहे थे। वे लोग एक के उपरान्त दूसरे बराबर शाह के पास बैठे रहते। इन दोनों के बैठने पर टौंक तथा फिलिप कोठरी में जाकर विश्राम करते।

कभी २ सर विल्फ्रेड उन खिड़ाकियों से झाँकने लगते जिस जगह बहुत से, राक्षस अग्निपर माँस सेकते और खाते दिखलाई पड़ते। हाल्डेन से बार २ गारद के जवान प्रश्न करते जिस्का कि उत्तर वह बहुतही शान्त रूप से देता। निस्सन्देह हाल्डेन भी चित्त का बड़ाही दृढ़ और साहसी व्यक्ति था, उस्की आँखें सर विल्फ्रेड के कानों पर लगी हुई थीं इतने में नीचे बड़ाही कोलाहल मचने लगा जिसे सुनके सर विल्फ्रेड ने पूछा—"सर हाल्डेन! खिड़की से देखो! यह कैसा कोलाहल है?

इससमय दिनके चार बजे थे। हाल्डेन ने झाँक कर देखा और उत्तर दिया "राक्षस एकत्रित होने लगे, ये चौबीस घण्टा पहिलेही से एकत्रित हो रहे हैं और अभी से वह भीड़ है कि के सामने तिल रखने का स्थान नहीं है।

शाह की अवस्था प्रत्येक क्षण बुरीही होती गई! यहाँ लों कि सर विल्फ्रेड भी अब देखकर घबड़ा उठे और कहने लगे "हाल्डेन! हमलोगों को उद्योग करना चाहिये कि इसे रात का अन्धकार फैलते [illegible] जीवित रक्खें नहीं, तो बड़ीही कठिनता होगी।

यह लोग इस्के उपरान्त शाह के सिरहाने तथा पैताने जा बैठे, उधर शाह की अवस्था देखकर और कुछ समझकर गारद के सिपाही भी भयावनी सूरत बनाये दरवाजे पर जा खडे हुये। कोठरी के बाहर बहुत से जङ्गली टहल रहे थे जिनके पैर परदे के नीचे से इनलोगों को दिखलाई देते थे। वे सब बार २ परदे से लगकर झाँक रहे थे।

शाह लागोस की साँस बड़ीही कठिनता से अब भीतर बाहर हो रही थी। वह केवल उन्हीं ब्रांडी और जल के बून्दों से जीवीत था जिन्हें सर विल्फ्रेड तथा राल्फ हाल्डेन बराबर उस्के होठों पर टपकाते जाते थे। बीच २ में रह २ के एक बड़ीही भयानक और काँपती हुई कमजोर आवाज रोगी के मुंह से निकल जाती। अब बात खुलजाने में कोई कसर न रह गई थी, परन्तु उस्पर भी सर विल्फ्रेड की सावधानी ने अबलों गार्ड के नेत्रों परदा पड़ाही रहने दिया।

अब साढ़े चार बजे होंगे और अस्त होता हुवा सूर्य उन दोनों पश्चिमी खिड़कियों से झलकने लगा। सुर्ख और चमकीले पत्थरों से जड़ी हुई कोठरी सूर्य के पीले किरनों से चमकने लगी। और मानों उस चमकीली रोशनी ने रोगी और उस्की उस पत्थर की चारपाई को, जिस्पर वह सोया हुवा था सोने के पानी के से नहला दिया।

राल्फ हाल्डेन अब उस खिड़की की ओर बढ़े जिस्में फिलिप तथा टौंक खड़े नीचे की बहार देख रहे थे और इधर

सर विल्फ्रेड शाह की चारपाई के नीचे बैठकर प्याले में जल तथा ब्रांडी की बून्दें मिला रहे थे कि सहसा उनके कानों में एक तीक्ष्ण कफ की खरखराहट सुन पड़ी।

सर विल्फ्रेड यह सुन्तेही घबड़ाकर उठ बैठे और मरते हुये शाह के पास उस्की चारपाई पर बैठ गये। उन्हें अब एक बड़ीही भयानक परन्तु सच्ची झलक रोगी के चेहरे से दिखलाई दी। शाह के मुंह से गाज या फेन के साथ वह ब्रांडी और जल की बून्दें जो, उसे पिलाई गई थीं निकलकर उस्की गरदन पर बहने लगीं, और एकही हिचकी के उपरान्त शाह लागोस मुरदा था।

सैंतीसवाँ बयान।

बादशाह के मरने पर जो २ आपत्तियाँ इनपर आनेवाली थीं, वह सब उनके नेत्रों के सामने घूम गईं और एक क्षण के निमित्त सर विल्फ्रेड अचेत थे।

हाँ जब वह भयानक समय कुछ आगेबढ़ा तो, इनकी बुद्धि ठिकाने हुई और यह सोचने लगे कि अब हमारे बाँधे हुये मनसूबे सब मिट गये। आपत्ति अब आयाही चाहती है हमलोग बड़ी बुरी मृत्यु से मरे! परन्तु फिर दूसरेही क्षण में इनके पहले के ध्यान में अन्तर पड़ने लगा। उन्हें शाही गारदही से बड़ा भय था परन्तु उसे अबलों जो निश्चिंतता से खड़े

पाया, तो इनके शरीर में फिर प्राणपवन आये। तो भी उनके हृदय में वह भयानक तस्वीरें आ आ के उन्हें डेराये देती थीं और उस्का भाव इनके चेहरे से प्रगट हो रहा था जिसे छिपाने के निमित्त ये शाह के ऊपर मुँह नीचा किये झुके हुये थे।

अब जितना वह भयानक समय आगे बढ़ता जाता था उतनीही इनकी हैरानी मिटती जाती थी यहाँ लों कि सर विल्फ्रेड के चित्त में फिर वही छुटकारे का जोश दिखलाई पड़ने लगा। उन्होंने हाथ के दबाव से चीते के चमड़े को जो शाह के नीचे बिछा था खींचकर लाशके चेहरे के बराबर कर दिया, और फिर बड़ीही निस्तब्धता तथा शान्त रूप से ये सीधे खिड़की की ओर बढ़े। एक दृष्टिशाही गारद पर भी उन्होंने डाली जो उसी प्रकार चुपचाप खड़े थे, और उनके चेहरे से किसी प्रकार का चिन्ह न दिखलाई पड़ता था।

हाँ तो सर विल्फ्रेड आगे बढ़े, और तुरन्त हाल्डेन का हाथ पकड़ के एक कोने में ले गये; एक चाँदी का सिक्का देकर कहैन लगे। "इस्को कप्तान जोली के पास शीघ्रही भेजो, वह इस्के मतलब को भली भांति समझ जायगा। शान्त रूप धारण करो! सावधान किसी प्रकार की उत्सुकता अपने चेहरे से न प्रगट होने दो"।

यदि हाल्डेन यथार्थ बात को समझे होता तो कदापि उस्के आकार से इतनी व्यग्रता न झलकती, तो भी उसने बहुत कुछ छिपाया और चाँदी का सिक्का तुरन्त गारद के सिपाही को दे कप्तान के पास भेज दिया, जिसे वह लेकर और अपने साथी को

आश्चर्य करता छोड़कर शीघ्रता से बाहर चला गया ।

फिलिप को इनबातों से कोई वास्ताही न था, वह बड़े आनन्द से खड़ा होकर खिड़कियों से दो राक्षसों की कुश्ती देख रहा था ।

हुल्लड़ और मार पीट का शब्द सुनकर वह दूसरा गार्ड भी उस तमाशे के देखने के निमित्त खिड़की की ओर चला ; और यह बात, सर विल्फ्रेड के इच्छानुसारही हुई ।

गार्ड के खिड़की तक पहुँचते २ वह उस्के पीछे जा पहुँचे, और उचक कर उस्की गरदन पर चढ़ गये, और तुरन्त अपने हाथ उस्की गरदन में लपेटकर एक कड़ा झटका पीछे की तरफ दिया, जिस्से वह घूमकर तुरन्त पृथ्वी पर गिर पड़ा ; और इतनी कड़ी चोट उस पथरीले फर्श की उस्के सिर में पहुँची कि वह तुरन्त अचेत हो गया । इस्के पहले कि वह अपना कोई अङ्ग हिलाये सर विल्फ्रेड के साथियों ने तुरन्त उसे छोप लिया और अपने पूरे २ बल से उस्पर चढ़ बैठे ।

सर विल्फ्रेड—इस्का मुंह बन्द करो ! यह साबर का चमड़ा रक्खा है, इसे इस्के मुंह में ठूस कर उपर से पट्टी बाँध दो । हाल्डेन ! तुम इस्की बन्दूक ले लो ।

अब सर विल्फ्रेड को दूसरी बात कहने का समय न था, क्योंकि बाहर बरामदे में उस दूसरे गार्ड के आने की धमक सुन पड़ने लगी । इसपर सर विल्फ्रेड तुरन्त एक टूटी बन्दूक

का कुन्दा लेकर, जो दूसरी कोठरी से लाये थे दरवाजे के बगल में जा खड़े हुये।

अब पैरों के शब्द निकट आते जान पड़ने लगे, और अब और भी निकट आये, यहाँ लों कि दूसरे क्षण में उस दूसरे गार्ड ने परदा हटाया और कोठरी में प्रवेश किया, निकट था कि आनेवाला गार्ड अपने साथी को देखे, परन्तु इस्के पहलेही सर विल्फ्रेड ने कुन्दे का वह भरपूर हाथ उस्के सिर पर लगाया कि बिना एक शब्द कहे वह भी भूतलशायी हो गया।

इस्के गिरतेही सर विल्फ्रेड ने तुरन्त इस्के पैर पकड़ कर रास्ते के किनारे कर दिया; और फिर परदे की झिंझरी से झाँक कर देखा तो मालूम हुवा कि बाहर के गार्ड बड़ीही निस्तब्धता से खड़े हैं।

सर विल्फ्रेड—अब दूसरी कोठरी! उस्में जल्दी चलो! शाह मर गया! और अब तक हमलोग अपनी होशियारी से बच रहे हैं। इन दोनों को यहीं पड़ा रहने दो इन्हें हाशे में आने के लिये एक बड़ा समय चाहिये।

यह कहकर सर विल्फ्रेड ने उस दूसरे सिपाही की बन्दूक भी ले ली और शीघ्रता से उस दूसरी कोठरी की ओर बढ़े, हाँ चलती समय शाह के शव (लाश) को भी देख लिया; जिस्के नेत्र खुले हुऐ थे, और मानों बड़ेही दुःख से वह उस कमरे

को देख रहा था, जिस्में कुछ मिनिट पहले वह अपने संसार के साथियों में से एक कहलाया जाने का अधिकारी था।

सर विल्फ्रेड के साथी भी, उनके पीछे हो लिये और सब मिलकर उस कोठरी में आये। आतेही अर्ल ने पहला काम यह किया कि छेद पर का पत्थर अपने अतुल बल का परिचय देते हुये उठा कर अलग रख दिया, और फिलिप तथा राल्फ ने उसे वहाँ से दूर कर दिया। पत्थरों के हटने पर जब प्रकाश शेरों के कमरे में पहुँचा तो वे जोर से गरज उठे।

सर विल्फ्रेड—अब सबसे आवश्यकीय कार्य यह है, कि इस पत्थर को कोठरी के दरवाजे पर लगादो; जो कम से कम एक आक्रमण उनदेवों का तो अवश्यही रोक सकेगा।

यह काम तुरन्तही परन्तु कुछ कठिनता के उपरान्त समाप्त हुवा और तब सरविल्फ्रेड ने जल्दी से एक बन्दूक की टूटी नली को आड़ा करके, उस छेद, वा चोरदरवाजे पर लगा दिया, और एक कोना रस्सी की सीढ़ी का दृढ़ता से उस नली के बीचों बीच बाँध दिया, और फिर सीढ़ी को पूरी लम्बाई में, जो शेरों की कोठरी के जमीन तक पहुँचती थी छोड़ दिया। इस्के उपरान्त सरविल्फ्रेड ने अपनी जेबें तो बम के गोलों, और हाथ दियासलाई से भर लिये।

सर विल्फ्रेड—अब एक क्षण भी ठहरना बुद्धिमानी के विरुद्ध है मैं नीचे जाता हूं और वहाँ जाकर जब बम के गोले छोड़ूंगा तो चौदहों का शब्द गिनकर फिर तुरन्त तुमलोग बन्दूकों सहित

नीचे उतर आना । इतने में यदि एक आक्रमण द्वार के ओर से हो भी तो वह बन्दूकों से सम्भालना। हाँ अब इस्में भी कठिनता वा दुबधा है, तो कप्तान जोली के ओर से; यदि वह समय पर न आ सके तो भली भाँति समझ रखना कि पृथ्वी का कोई बल भी हमलोगों के प्राण नहीं बचा सक्ता।

सर विल्फ्रेड इस्के उपरान्तही उस छेद में उतर गये और सीढ़ी के डडों से एक २ करके नीचे उतरते जाते थे, यहाँ लों कि कोठरी के घोर अन्धकार ने सर विल्फ्रेड को उनके साथियों की दृष्टि से छिपा लिया।

उस समय हमारे बीर अर्ल (राजा) के चित्त में जो बातें होंगी, उन्हें हम अपने प्रिय पाठकोंहीं के अनुमान करने के निमित्त छोड़ देते हैं। पहले तो उन्होंने एक दियासलाई जलाई, जिस्के प्रकाश में यह देखा कि हम पृथ्वी से १२ या १५ फीट ऊँचे हैं, और यह देखतेही वे चुपचाप वहीं बैठ गये; सिंहों की उछल कूद सुन्ने लगे, जो उनके आने से सूचित हो चुके थे और उनके नीचे प्रसन्नता से इधर उधर घूम रहे थे।

केवल उसी एक डोरी पर सर विल्फ्रेड तथा उनके साथियों का जीवन निर्भर था। वह कितनीही बातें दिलही दिल अपने, कप्तान जोली, और उस्के कार्य के बारे में सोच रहे थे। वह सोचते थे, कि कदाच वह अपने स्थान से तो चला हो, परन्तु जङ्गलियों ने उसे महल के सामने आने की आज्ञा न दी हो;

या वह द्वार खोलही रहा हो ऐसे समय हबशियों ने देखकर उसे बन्दी कर लिया हो।

यही सब सोचते २ लगभग दस मिनिट के बीत गये यहाँ लौं कि अब निराशा की भयानक मूर्ती उनके नेत्रों के सामने झलकने लगी, और वह अपने चित्त में निश्चय कर चुके कि हमारा मनसूबा बिलकुल बरबाद हो गया। प्रत्येक क्षण उनके चित्त में, ऊपर से हबशियों के पैरों का शब्द, भयानक चिघाड़, और बन्दूकों की घननाद सुनने, की आशंका उपस्थित होती थी, क्योंकि उन्हें यह मालूम था कि शाह की यथार्थ अवस्था हबशी अब जानाही चाहते हैं।

सर विल्फ्रेड यही सब सोचते थे कि सहसा एक शब्द सुन पड़ा जिसे सुन्तेही सर विल्फ्रेड चौंक पड़े, चाहते थे कि ऊपर चढ़ें और अपने साथियों के बुरे भाग्य में साथ दें, परन्तु साथही उस शेरखाने का बड़ा फाटक पहियों की खड़खड़ाहट के साथ घूम कर खुल गया और एक हलका प्रकाश उस अन्धकार में फैल गया। एक सरसरी दृष्टि में सर विल्फ्रेड पर यह भी विदित हो गया कि बाहर बहुत से जङ्गली एकत्रित हैं परन्तु द्वार के निकट कोई भी नहीं। आह! इससमय इनकी प्रसन्नता का क्या कहना? तुरन्त इन्होंने बम के गोलों में आग लगाना और नीचे फेंकना प्रारम्भ किया। परमेश्वर तेरी शरण उन बम के गोलों के भीषणनाद के साथही साथ उन सिंहों की हहाड़ कैसी प्राण सुखानेवाली थी। धुँवा कोठरी में छा गया

और वे भयानक पशु गरजते हुये द्वार की ओर भागे और उस्के बाहर हो गये।

एक हर्षनाद सर विल्फ्रेड ने किया और फिर तुरन्त रस्सी की सीढ़ी से उतर कोठरी में आये। अभी इन्होंने पृथ्वी पर पैर रक्खेही थे कि कप्तान जोली बाहर से झपट के आये और अपने मित्र के गले से लग गये। अब यह समय उनसे बात चीत करने का न था। उधर फिलिप सब से पहले सीढ़ी पर से उतरने लगा, और इधर सर विल्फ्रेड तुरन्त उस बड़े फाटक को, जिसे जोली ने खोला था बन्द करने के निमित्त बढ़े।

कोठरी के बाहर, महल के सामनेवाले मैदान में भयानक दृश्य उपस्थित था। पन्द्रह भूखे सिंह एक के उपरान्त दूसरे जङ्गलियों पर टूट रहे थे और जो सामने मिलता फाड़ते जाते थे। देव रक्षा का स्थान इधर उधर ढूंढ़ रहे थे; और उन मनुष्यों की चिल्लाहट कान फाड़े डालती थी जिन्हें सिंह फाड़ रहे थे।

सर विल्फ्रेड के द्वार बन्द करके लौटने तक फिलिप नीचे उतर आया और इस्के उपरान्तही टौंक भी; परन्तु राल्फ हाल्डेन अबलों छेद पर न आये थे, और जैसेही सर विल्फ्रेड ने उनका नाम लेकर पुकारा वैसेही केवाड़ों में धक्के के शब्द न पड़े और फिर एक धमाके के उपरान्तही बहुत से पैरों के ब्द और जङ्गलियों की चिंघाड़ें सुन पड़ने लगीं। इन्हीं चिंघाड़ साथही दन्नाटा हुवा! और फिर वही भयानक शब्द सुन पड़ा,

ओर फिर भी ! जिसने बन्दूक के तीन फायर होने की सूचना इन लोगों को दी।

सर विल्फ्रेड—(चिल्लाके) मैं अभी ऊपर जाता हूं और हाल्डेन की सहायता करूंगा।

जैसेही उन्होंने ऊपर चढ़ने के लिये सीढ़ी पर पैर रक्खा वैसेही छेद में अँधेरा आ गया और हाल्डेन शीघ्रता से नीचे आने लगे। वह प्रत्येक डंडो पर पैर नहीं रखते थे बरन हाथों पर झूलते हुये जल्दी २ नीचे आये, और अभी जब ये पृथ्वी से दस फीट के निकट ऊँचे होंगे, तभी रस्सी की सीढी छोड़ दी और धम से नीचे कूद पड़े।

हाल्डेन—(जल्दी से) भागो ! वे आते हैं।

साथही ऊपर एक अन्धकार आ गया और एक देव नीचे उतरने लगा।

सर विल्फ्रेड—जल्दी सब मिलकर रस्सी की सीढ़ी को पकड़ो और नीचे खींचो।

इस्के उपरान्तही सबने मिलकर जोर लगाया और पूरी २ ताकत से रस्सी जो खींची गई, तो बन्दूक की नली की गाँठ खुल गई ! और सीढ़ी उस देव सहित जो उप्पर से नीचे आ रहा था, नीचे आ रही।

अड़तीसवाँ बयान।

सर विल्फ्रेड ने तुरन्त दियासलाई जलाई और उस देव के चेहरे को देखना प्रारम्भ किया, जिस्की गरदन, उतने ऊँचे से गिरने के कारण टूट गई थी।

ईश्वर जाने कितने प्रकार के पशुओं के चमड़े वह अपने शरीर पर लपेटे हुआ था। उस्के सिर पर सिंह के कान लगे हुये थे, और उस्की चौड़ी छाती तथा चेहरा, भिन्न २ प्रकार के रङ्गों से रङ्गा हुवा था।

सर विल्फ्रेड—ईश्वर की सौगन्द! कैसा भयानक तथा बलिष्ट देव यह है। यह अवश्य इस जाति के जोतिषियों और जादूगरों में से है यह हमलोगों को सिंहों के कमरे में डालने के निमित्त आया था। वह अपना होंठ क्रोध से चबा २ कर हमलोगों को घूर रहा है परन्तु अब यहाँ ठहरना व्यर्थ है शीघ्र बाहर चलो!

वे लोग शीघ्र शेर की कोठरी में से, उसद्वार की ओर से निकले, जिस्में से कुछ दिन पहिले सर विल्फ्रेड तथा हेक्टर अचाँचक घुस आये थे। यह चोरद्वार ठीक उस बड़े फाटक के सामने था, जिसे जोर्ली खोलकर अभी २ भीतर आये थे। यहाँ से [illegible]कलकर वे लोग श्रोता के पार हुये, जिस्का शब्द कप्तान ने सुने [illegible]र हेक्टर को जल के निमित्त भेजा था। इस चस्मे से पार [illegible]र ये लोग बाग की टूटी दीवार से बाहर निकले। इनके

सामने वा इधर उधर कोई राक्षस नहीं दिखाई देता था ! चारों ओर सन्नाटा था।

सर विल्फ्रेड ने फिलिप से बन्दूक ले ली, और दूसरी बन्दूक लिये हुये हाल्डेन भी उनके साथ २ हो लिये। फिलिप टौंक, तथा कप्तान, इनलोगों के पीछे थे; और सबके सब नदी के किनारे २ शहर के बाहर की तरफ भागने लगे।

सर विल्फ्रेड—हमलोगों को शायद यह नदी पार करनी होगी। फिलिप! सुस्त मत चलो, यदि तुम पकड़ जाओगे तो तुम्हारे पास रस्सी भी रह जायगी, और फिर हमारे भी हाथ पैर बेकाम हो जाँयगे।

इनलोगों ने चलते २ दूर से एक पुल देखा, और फिर कुछ देर तक वहीं ठहर गये।

सर विल्फ्रेड—क्या हमलोग उसपार पहुँच कर जङ्गलियों की पहुँच से बाहर हो जाँयगे। परन्तु नहीं यह ठीक न होगा वे लोग तुरन्त तैर कर हम तक पहुँच जाँयगे इसलिये उतना समय नष्ट जायगा। बस अब सीधे उत्तर की ओर चले चलो; हमलोग वहाँ नगर का फाटक पावेंगे और उसी से साफ निकल जावेंगे।

यह मनसूबा ठीक हुवा, और वे लोग फिर आगे भागे रास्ते में बिलकुल सन्नाटा मिलता गया।

सर विल्फ्रेड—आश्चर्य है कि हमलोगों के पीछे बड़ाही सन्नाटा है ! क्या यह संभव है कि हमारा पीछा न [illegible]

हाल्डेन—हामारी जान तो उनलोगों को सिहों ने चल विचल कर डाला होगा पहले तो वह अपनीही प्राणरक्षा कर रहे होंगे हाँ इस्के उपरान्त फिर हमलोगों के पीछे भी अवश्यही आवेंगे। देखिये भाग्य क्या दिखलाता है।

कप्तान—चलो चलो, शीघ्र चलो! (आपही आप) ईश्वर की सौगन्द जोली! तुम्हें शीघ्रता करनी होगी नहीं तो (जोर से) यारों अबकी पकड़े जाने के उपरान्त फिर कप्तान के पाने की आशा मत करना। अजी मैं तो आत्म हत्या करने पर था। मेरी हड्डियाँही गल मैं मर जाने पर था। वह बड़ीही भयानक राह थी जिस्से वह देवनी मुझे क्लेश पहुँचाती थी।

सर विल्फ्रेड—(हँसकर) उसने तुम्हारे साथ क्या किया जोली?

कप्तान—जी यह अनमोल बात भला ऐसे मैं बतानेवाला हूं?

सर विल्फ्रेड ने इस्के उपरान्त कुछ विशेष प्रश्न न किये, क्योंकि प्रथम तो अन्धकार बढ़ता जाता था दूसरे कप्तान साहब इनका साथ छोड़कर फिलिप के साथ दौड़ने लगे; जिसने इनके जाने के उपरान्त से, अपने ऊपर की पडी हुई कुल आपत्तियों का वृत्तान्त कह सुनाया। कप्तान साहब को उस्में से हेक्टर का हाल सुनकर बड़ाही दुःख हुवा, और यह दुःख कुछ सर विल्फ्रेड के दुःख से कम न था, और यह सुन उन्होंने तुरन्त कसम भी खाई, कि अब जो ये राक्षस मिलेंगे तो मैं अवश्य उनसे हे- [illegible]ला लूंगा।

नगर यह भाग का जिस्में कि यह लोग जा रहे थे पीछे के मुकाबले बड़ाही उजाड़ था। स्थान २ पर झाड़ झंखाड़ लगे हुये थे जिनमें छोटे २ जङ्गली पशु इधर से उधर भागे जाते थे।

शहरपनाह की दीवार तक पहुँचते २ बड़ाही अन्धकार छा गया। अब दीवार तो मिल गई परन्तु वहाँ कहीं फाटक न दिखाई देता था। बड़ी ढुँढ़ाई के उपरान्त एक खाई का छेद दिखाई दिया, जो कदाच् भीतर से बर्षा का जल आने के निमित्त बना हो। अस्तु! उसी में से एक २ करके हमारे बीर पथिक बाहर निकले।

बाहर निकलने पर ये लोग किले की दीवार से बिलकुल सटकर चलने लगे, और फिर आगे बढ़ कर कुछ दाहिने हाथ को मुड़े, जिस्के सामनेही एक पहाड़ी की चढ़ाई थी और इनलोगों ने दृष्टि जमाकर जो देखा तो जान पड़ा कि यह वही पहाड़ी है, जिस्पर चढ़कर हेक्टर तथा उस्के साथियों ने पहले पहल लाल नगर को देखा था: और विशेष आनन्द दायक बात तो यह मालूम हुई कि अब उन्हें नदी भी नही पार करनी थी।

वे लोग कुछही देर में पहाड़ी पर पहुँच गये और वहाँ जाकर चुपचाप खड़े हो गये। ये लोग बड़ी देर तक बिना बोले चाले खड़े थे; हाँ! बार २ नगर की ओर देखते जाते थे, परन्तु कुछ अग्निशिखा और स्थान २ पर प्रकाश के अतिरिक्त और उन्हें वहाँ कुछ न दिखाई पड़ता था।

सर विल्फ्रेड—अब आप लोगों की क्या राय है ? हमलोगों को अपनी अवस्था पर ध्यान देकर फिर मृत्यु की गुफा का पथ पकड़ना चाहिये ! जो लम्बाई में चालीस मील के नीचे नीचे नहीं हैं।

राल्फ—जी नहीं मैंने प्रायः उन राक्षसों से सुना है कि इस्का घुमाव इत्यादि सब मिलाकर कम से कम सौ मीलों के लगभग है। परन्तु ऐसे भयानक स्थान से निकलने के निमित्त हम-लोगों का आगे बढ़ना कुछ अनुचित न होगा।

लम्बाई का हिसाब सुनकर पहले तो सभी हिचकिचाये परन्तु फिर आगे बढ़नाही पड़ा, क्योंकि मृत्यु से तकलीफ अच्छी होती है। पहाड़ी से उतर कर यह झुण्ड पगडंडी पर होता, हरी २ दूबों को कचरता, तथा अन्धकार के कारण ऊँचे नीचे गट्ठों में ठोकर खाता गुफा की ओर बढ़ने लगा।

हाल्डेन—बस अब चन्द्रमा निकलाही चाहता है, कुछ देर नहीं है। फिर उस्के प्रकाश में हम अपनी राह तथा गुफा को भली भाँति देख सकेंगे !

"अरे !!! उधर देखो" यह कहकर सर विल्फ्रेड ने खुले हुये बन की ओर अपनी ऊँगली उठाई जिधर उनके सा-थियों ने देखा कि उनसे लगभग पचास गज के अन्तर पर कुछ काली मूरतें मृत्यु के गुफा की ओर बढ़ रही हैं।

हाल्डेन—अरे भई समझे ! ये राक्षस हैं जो हमलोगों की राह बन्द करने के लिये गुफा की ओर बढ़ रहे हैं और जब

वे उत्तर अधिकार कर लेंगे तो मानो फिर हमलोग उनके बश में होंगे ।

सर विल्फ्रेड—तब तो आपत्ति आयाही चाहती है, परन्तु अभी लों उनलोगों ने हमें देखा नहीं है । अच्छा ! फिलिप ; तुम, कप्तान तथा टैंक को लेकर जितना शीघ्र तुम से बन पड़े गुफा की ओर भागो इधर मैं और हालडेन तुम्हारी पीठ की रक्षा करता हुवा तुमारे साथ रहूंगा ! बस जल्दी ! समय नहीं है।

तुरन्त दौड़ प्रारम्भ हुई ! और जब ये लोग उन राक्षसों से लगभग बारह गज के आगे निकल गये, तो उन्होंने इन्हें देख पाया और देखतेही क्रोध से चिल्लाते बड़े बेग से इनपर टूटे परन्तु तो भी सर विल्फ्रेड का झुण्ड उनसे बारह गज आगेही था और वह प्रत्येक क्षण गुफा के निकटही होता जाता था । झुण्ड का प्रत्येक मनुष्य, अपनी इस बढती पर, और पाला हाथ रखने की आशा में आगे बढता जाता था । उधर लगभग छ देवों के बड़ीही शीघ्रता से अपने दौड़ते हुये साथियों से भी आगे बढ़े, और इन सुफेद मनुष्यों को काट डालने के लिये झपटे, परन्तु अभी वे लोग बीस फीट पीछे रहे होंगे जब फिलिप अपने साथियों सहित अन्धकार मय गुफा में कूद गया । इनलोगों के भीतर पहुँचतेही तुरन्त सर विल्फ्रेड और हालडेन गुफा के मुंह पर घूम कर खड़े हो गये, और बन्दूकों का मुंह उनलोगों के ओर फेर कर जो बाढ़ मारी तो उनमें से दो तो चिल्लाते हुये पृथ्वी पर लोटने लगे और बाकी के चार, अपने

साथियों को बुलाने के लिये पलटे जो गिनती में पचास से किसी प्रकार से कम न होंगे।

सर विल्फ्रेड ने इसपर कुछ भी ध्यान न दिया, उनका वह साहस जो वीरों ही को प्राप्त होता है हाथ बाँधे उनके सामनें उपस्थित था। जबतक वे देव अपने साथियों सहित पुनः लौट के आयें २ तब से वह गुफा के बाहर झपट कर आये और उस मरे हुये जङ्गली की तीर कमान और बरछा लेकर फिर बिना किसी आपत्ति के गुफा में पहुँच गये। साथही इनके पीछे हथियारों की एक भयानक बौछार आई।

सर विल्फ्रेड ने भीतर पहुँचतेही अपने साथियों को भागने के लिये कहा और फिर दौड़ प्रारम्भ हुई। वह भयानक अन्धकार मय गुफा; जिस्में इनके दुर्भाग्य ने लाकर इन्हें फँसा दिया था बड़े २ पत्थरों के ढोंको से भरा हुवा था जिस्से ये लोग ठोकरें खाते और प्रत्येक मोड़ पर गुफा की दीवार से सिर टकराते गिरते और फिसिलते आगे बढ़े जाते थे। इनके पीछे देवों का भयानक कोलाहल, और उनके पैरों की विचित्र धमक बड़े वेग सुन पड़ती थी और जान पड़ता था कि वे बहुतही निकट हैं।

सर विल्फ्रेड ने दौड़ते २ यह किया कि वह तीर और कमान तो टैंक को दी, और बरछा कप्तान के हाथ में थँभाया, फिर आप और हाल्डेन ने कई फैर बन्दूक की सर कीं और फिर अपने साथियों के पीछे दौड़ने लगे।

उन बन्दूकों के प्रचण्ड शब्द ने जङ्गलियों की चाल में कुछ फर्क डाल दिया; और फिर उनके भी तो पैर उन चिकने पत्थरों पर पड़ते थे, जिस्से वे इधर उधर गिर रहे थे। इसके अतिरिक्त उनकी बड़ीही बोझैल ढालें और भी उन्हें दौड़ने से रोकती थीं।

यद्यपि यह गुफा बड़ीही ठंढी थी परन्तु भागनेवालों पर इस्का कुछ भी फल न प्रगट होता था। उनके रक्त में इससमय बड़ाही "जोश" था। यहाँ लों कि उस्की गरमी से उनके चेहरे से लगातार पसीने की बूंदें टपक रही थीं, और थार्थ में इस्स-मय वे लोग वह काम कर रहे थे जो इनके बल से बाहर था। बीच २ में सर विल्फ्रेड की बातें और भी उनके साहस को बढ़ा रही थी, जिस्से वे बराबर तेजी से दौड़े चले जाते थे।

राक्षस यद्यपि पीछे थे पर तोभी वे आगे बढेही चले आते थे, और ऐसा अनुमान करलेना बड़ीही मूर्खता थी कि "वे पीछा करना छोड़ देंगे" परन्तु उधर जब आगे भागनेवाले एक मोड़ से आगे बढ़े तो उनके नेत्रों के सामने एक बड़ाही विचित्र दृश्य उपस्थित था। बहुतसी लकड़ियाँ गुफा की दीवार से लग-कर जल रही थीं और उस्की निकलती हुई शिखा तथा चक्कर खाते हुये धुँये में दो मूर्ति खड़ी दिखलाई देती थीं।

उन्तालीसवाँ बयान ।

कप्तान—(जो सबके आगे थे) हाय! मेरी हड्डियाँही गलें हमलोग फिर घेरे गये! वह देखो सामने कुछ राक्षस खड़े हैं।

सर विल्फ्रेड—नहीं वे राक्षस नहीं जान पड़ते!

कप्तान जोली के शब्द जो उन दोनों के कानों तक पहुँचे तो, वे तुरन्त अपने हाथों में बलती लकड़ियाँ उठाकर इनलोगों की ओर झपटे, और उन लकड़ियों के प्रकाश में जो सर विल्फ्रेड तथा उनके साथियों ने उन्हे देखा तो जान पड़ा कि ये दोनों वही मूर्तियाँ हैं, जिन्हें हम अब तक मुर्दा समझे बैठे थे अर्थात् "हेक्टर और चेको"।

एक विचित्र सुखमय किलकारी मार कर सर विल्फ्रेड हेक्टर की ओर बढ़े और उसे तुरन्त हाथों में लेकर धड़कती हुई छाती में जोर से लगा लिया। इधर तो ये हेक्टर को छाती से लगाये हुये थे उधर चेको एक कोने में मारे प्रसन्नता के नाच रहा था। इसके उपरान्त सर विल्फ्रेड ने हेक्टर को राल्फ हालडेन की गोद में जो उनके निकटही खड़े थे डाल दिया।

सर विल्फ्रेड—हालडेन! (जोर से) हमलोगों को क्षमा करना यह तुम्हाराही बेटा है जिसे राक्षस पकड़ ले गये थे।

यह सुन्तेही राल्फ हालडेन के मुंह से एक विचित्र चीख निकल गई और उसने एक अनोखी दृष्टि से सर विल्फ्रेड को देखा, और तब हेक्टर को गले से लगा लिया।

हाल्डेन—(धीरे से) परमेश्वर उस काम का परिणाम। मुझे क्षमा कर!!!

इतने में सर विल्फ्रेड, जो आगे बढकर स्थिरता से कान लगाये कुछ सुन रहे थे जोर से कहने लगे "बस अब यह समय बातचीत का नहीं है हमारे पीछा करनेवाले अब यहाँ पहुँचाही चाहते हैं अब आगे बढ़ो"!

हेक्टर—मेरे पास इस्का भी अच्छा सामान है, कुछ लकड़ियाँ ऐसी पड़ी हैं जो राह में प्रकाश करती चलेंगी, और जिनके प्रकाश में हम जङ्गलियों से बहुत आगे बढ जावेंगे।

सर विल्फ्रेड—सब जलती और सूखी लकड़ियाँ इकट्ठी करके लेलो देखो उनके निमित्त उसमें की एक भी न रहने पावे।

यह सुन्तेही हेक्टर झपट कर आगे बढ़ा, और उसने सब सूखी तथा जलती लकड़ियां उठा लीं। इतने में एक आवाज आई "हिज्ज़ !!!" और एक बरछा सर विल्फ्रेड के सिर से एक फुट के अन्तर से निकल कर दूर जा पड़ा। जङ्गली कठिनता से दस गज के अन्तर पर होंगे, जब इन लोगों ने फिर दौड़ प्रारम्भ की, और हेक्टर तथा सर विल्फ्रेड बड़ीही शीघ्रता से इनके आगे २ प्रकाश करते हुये बढ़ने लगे।

प्रकाश के कारण राह भली भांति दिखलाई देती थी। अब इन्हे किसी दीवार के निकले पत्थरों के ठोकों से क्लेश नहीं मिलता था, परन्तु जङ्गली नङ्गे पैर और अन्धकार के कारण बड़ेही क्लेश से धीरे २ बढ़ते थे।

हेक्टर—मुझे यह मालूमही था, कि आप किसी न किसी भांति अवश्य उनमें से भागियेगा, और यही कारण है, कि मैं सीधा गुफा में आया, और इसी से जब आप लोगो में से एक ने मुझे पुकारा, मैं तुरन्त पहिचान गया। अच्छा अब मैं अपना कुछ पिछला वृत्तान्त सुनाता हूं। उस रात को उन देवों ने जब मुझे पिंजड़े के बाहर निकाला तो सीधे नदी के किनारे एक बिशेष स्थान पर ले चले, जहां वे सदैव अपने आखेट को भूना और खाया करते हैं। वहां पहुँचने पर मैंने तो अनुमान किया, कि अब यहां से छुटकारा असम्भव है। पर मैंने एक चाल खेली अर्थात् दम साध कर पड़ गया। और जैसेही वे तनिक मुझ से अचेत हुये तुरन्त सिर पर पैर रख कर भागा।

मुझे भागते देख कर उन लोगों ने दौड़ा लिया, परन्तु मैं उनसे आगे था, और एक झाड़ी में दबक कर मैं उसी में छिप रहा। कुछ देर तक छिपे रहने के उपरान्त मैं वहां से निकल कर शहरपनाह की दीवार के पास आया, और उस पथ से, जिस्से मैंने नाव सहित प्रवेश किया था, बाहर निकला। बाहर निकल कर वहां आप लोगों के निमित्त छिपे रहना, मुझे उचित न जान पड़ा, और इस लिये भोजन के निमित्त कुछ फल और गरमी के निमित्त कुछ जलनेवाली लकड़ियां लेकर इसी गुफा में चला आया, क्योंकि मुझे निश्चय था, कि आप अवश्य आइयेगा और इसी राह से आइयेगा।

मेरी प्रसन्नता उस समय और भी बढ गई, जब मैंने गुफा

में चेको को भी पाया । वह बेचारा उस दिन पानी में गोता मार कर दूर एक झाड़ी के पास निकला, और रात तथा दो दिन तक वह वहां छिपा रहा, फिर दूसरी सन्ध्या को वहां से निकल कर वह भी इसी गुफा में आ बैठा था। हम लोग इतने दिनो में कई बेर बाहर, लकड़ियाँ तथा जल लेने के लिये गये थे। चेको जब आप लोगों के न आने पर घबड़ाता तो मैं उसे दिलासा देता जाता था।

सर विल्फ्रेड—क्यों जी! भला यह कैसे हुवा, कि हम लोग मिन के तक नहीं और तुझे राक्षस पकड़ ले गये?

हेक्टर—मैं अभी इसे न निवेदन करूँगा! परन्तु हा, वह समय आता है, इसका फैसला आपही को करना होगा।

यह कह कर वह कुछ पीछे हट गया, और अपने पिता के साथ दौड़ने लगा, अब इन लोगों के चित्त में आशा का अंकुर दिखलाई देने लगा। पीछा करनेवाले यद्यपि बढ़ेही आते थे, पर तो भी अब उनके पैर वा किसी प्रकार के शब्द इन्हें न सुन पड़ते थे। अब केवल इन्हीं लोगों के पैरों के शब्द से गुफा में प्रतिध्वनि हो रही थी।

इसी प्रकार ये लोग, बिना किसी रुकावट के बड़ी देर तक दौड़ते रहे; अन्त सर विल्फ्रेड जो इनसे कुछ आगे दौड़ रहे थे सहसा एक दम रूक गये, और उनके साथियों ने एक तेज ह ड़हड़ाट जल के बहने की सुनी।

सर विल्फ्रेड—शीघ्र प्रकाश करो ! इस्के बिना पुल नहीं तैयार हो सक्ता, और साहस से यहीं जमे खड़े रहो।

वही खाई जिसमें सर विल्फ्रेड टैंक सहित डूबे थे, सामने थी। इनके सब साथियों ने झुण्ड बाँध कर एक २ कर झांक कर उसे देख लिया। इस्के उपरान्त हेक्टर, इन लोगों से कुछ अन्तर पर जा बैठा, जिसे यों अकेले बैठा, देख कर फिलिप, दुष्ट फिलिप, उस्के निकट आया, और उसने उस्का हाथ पकड़ लिया।

फिलिप—क्षमा कीजियेगा, मैंने इस्के पूर्व, आप के आने पर आप का स्वागत नहीं किया। मेरे प्यारे ! मैं यह नहीं कह सका, कि तुम्हारे आने पर कितना हर्ष मुझे हुआ।

हेक्टर—(हाथ झिटक कर कड़ाई से) तनिक अलगही रहियेगा ! जब मैं तुम्हारी नीच प्रकृति से सचेत हो गया, तो फिर मैं तुमसे काहे को बात करने लगा ! तुम एक दुष्ट और पाजी मनुष्य हो, तुमने अपने प्राण बचाकर हमें इस भयानक मृत्यु के मुह में ढकेल दिया। बस इसी लिये न, कि हेक्टर मारा जावे। बस दूर हो मेरे सामने से।

फिलिप का चेहरा यह सुन्तेही पीला पड़ गया; और फिर उसने चेको के हाथ का बरछा छीन लिया, और वह हेक्टर पर बढ़ाही था, कि इनके साथियों ने जो वहीं निकटही थे, बीच बचाव कर दिया, और इस्के पहिले कि इस मामले की यथार्थता किसी ओर से सांधान की जावे, बरछों तथा ढालों की खड़खड़ाहट से गुफा गूँ-ने लगी।

सर विल्फ्रेड—ईश्वर की सौगन्ध राक्षस आगये ! हेक्टर, तुम कप्तान सहित बन्दूक लेकर राह की खबरदारी करो । फिलिप, तुम शीघ्र वह रस्सियों की सीढ़ी हमें देदो । अब में एक दम कार्यारम्भ करता हूं, मेरे जान ये राक्षस अभी हमसे बहुत पीछे हैं ।

जो कुछ अर्ल ने सोचा तुरन्त उसमें हाथ भी लगा दिया। पहिले तो उन्होंने सीढ़ी का एक सिरा उस बडे पत्थर म बाँधा जिसमें पहिला पुल दबा हुवा था, और फिर उसका दूसरा सिरा एक दूसरे पत्थर के टुकड़े में कस दिया, और फिर इस टुकड़े को कुछ समय पर्यन्त वायु में इधर उधर झुला कर जोर से उस्पार लोका दिया, जो शीघ्रतासे उस्पार जा पड़ा। सरविल्फ्रेड ने निशाना ताका था, कि इनकी रस्सी का बँधा हुवा पत्थर उन नुकीली चट्टानों में जा पड़े, जो पानी की काट से विचित्र प्रकार के बनं गये थे, परन्तु पत्थर उनसे कुछ हटके बगल में जा गिरा, और फिर वहां से लुढ़क कर पानी में गिर पड़ा ।

अर्ल ने गम्भीरता से फिर उस खींचलिया, और उसी तरह दोबारा फिर डाला । इसमें वे कृतकार्य हुये। अबकी इनका पत्थर उस निशाने के पीछे चला गया, और जब इन्हों ने उसे कुछ आगे खीचा तो इनको बड़ीही प्रसन्नता प्राप्त हुई । कारण यह कि कुछ निकले हुये पत्थरों के नोकों ने उसे अपने बीच में अटका लिया था ।

अब तक राक्षस दिखाई नहीं दिये थे, इस लिये सर वि-

ल्फ्रेड ने रस्सी की सीढ़ी को सबसे खींचने के लिये कहा, और जब वह इस परिक्षा में पूरी उतर चुकी तो सर विल्फ्रेड उस्पार जाने के निमित्त प्रस्तुत हुये ।

हेक्टर—(जोर से) महाशय आप इस कठिन राह से कदापि न जाइयेगा ! " परन्तु अन्त कोई तो जायेहीगा ना " सर विल्फ्रेड न यह कहा और तुरन्त उस रस्सी की सढ़ी को हाथ से पकड़ कर झूल गये । और एक हाथ के उपरान्त दूसरा हाथ रखते, वायु में झूलते उस्पार जाने लगे । इनके मित्र दांत पर दाँत रक्खे चुपचाप यह भयानक दृष्य देख रहे थे । और उस समय उनके प्रसन्नता की कोई सीमा न रही, जब उन्हों ने सर विल्फ्रेड को उस्पार पहुँचते देखा ।

यद्यपि सर विल्फ्रेड इस्तरह उस्पार पहुँच गये । परन्तु उनके अन्य साथियों के लिये यह बड़ाही कठिन कार्य था, और इस लिये उन्हों ने पुल बनाना प्रारम्भ किया ।

सर विल्फ्रेड ने वहां पहुँचतेही रस्सी की सीढ़ी को तान कर दृढ़ता से एक चट्टान में बाँधना प्रारम्भ किया । अभी उनका यह काम समाप्त न हुवा होगा कि इनके साथियों की चिल्लाहट ने उन्हें अपनी ओर फेरा, अब सर विल्फ्रेड उस प्रकाश में देखते हैं कि बहुत से राक्षस उनके साथियों के ओर बढ़ रहे हैं ।

चालीसवाँ बयान ।

"सावधान! अब उन्हें तिल भर भी आगे न बढ़ने दो! और पांच मिनिट पर्यंत इन्हें रोके रहो" यह सर विल्फ्रेड ने ललकार कर कहा "छोड़ो बन्दूकें।"

इस बीर पुरुष ने वास्तव में कठिन से कठिन आपत्तियों के समय अपनी बुद्धि ठिकाने रक्खी; इसकी इस आवाज़ ने इसके साथियों के शरीर में एक नई ही आत्मा फूंक दी! राल्फ हाल्डेन टैंक तथा फिलिप तो चट्टानों के पीछे लेट गये और चेको जो तीर कमान से सुसज्जित था दीवार के कोने में खड़ा होकर निशाना मारने लगा।

कप्तान जोली तथा हेक्टर, तुरन्त घुटनों के बल बैठ गये और एक बारगी उन्होंने जंगलियों को बाढ़ पर रख लिया। वे लोग अब बीस गज़ के अन्तर पर आ गये! और इधर इनकी बन्दूकें खाली होतेही राक्षसों में चिल्लाहट मच गई और कितनेही पृथ्वी पर गिर कर लोट रहे थे। परन्तु इसपर भी उनलोगों ने साहस किया और धीरे २ आगे बढ़ेही आते थे कि साथही हेक्टर ने कड़क कर आवाज़ दी "फायेर।"

इस्बार गोलियों ने पहले से भी कुछ विशेष अपना भयानक काम किया कितनेही यम लोक पहुँचे; परन्तु उनमें से छः पाषाण हृदय बड़ीही शीघ्रता से झपटते हुये इनकी ओर चले। इतने में हेक्टर और कप्तान ने फिर निशाना ताक कर

जो गोली चलाई तो दो उसमें से और गिर गये, और साथही चेको का सनसनाता हुवा तीर एक के हृदय से पार हो गया, जिससे वह भी वहीं गिर पड़ा, परन्तु बाकी के तीन और भी शीघ्रता से बढ़े, और अब केवल २० फीट के अन्तर पर इनसे आकर अचांचक वह रुक गये। कदाच उन दोनों को बन्दूक भरते देख कर वे सोचते हों कि अब आगे बढ़ें, या पीछे लौटें।

बस उनके रुकतेही हेक्टर की गोली ने अच्छा काम कर दिखाया। हेक्टर तुरन्त अपने स्थान से कुछ दहिने [illegible], अब यहां से निशाना बाँधने पर वह जङ्गली आगे पीछे पड़ते थे, बस ऐसे समय जो हेक्टर ने गोली मारी तो दोनों एक साथही ढेर हो गये।

कप्तान—(चिल्ला कर) हाय अब मरे!

इसके उपरान्तही इन लोगों पर जङ्गलियों ने बरछे तीर तथा पत्थरों की बौछार प्रारम्भ की, और धीर २ आगे भी बढ़ने लगे, कि साथही इनके पीछे से एक आवाज आई, "पुल तैयार है, अब शीघ्रही एक २ करके उसपार चलो। चेको तू पहिले जा, और फिर टौंक और इसके उपरान्त फिलिप"! अब इन लोगों ने पीछे फिर देखा तो सर विल्फ्रेड को इसपार खड़े पाया, जो पुल तैयार करके उसपर से उतर आये थे।

सर विल्फ्रेड उस समय तक ठहरे रहे, जब टौंक और चेको दोनों कुशल पूर्वक उसपार पहुँच गये, और फिलिप अभी राह में था। यह देख कर सर विल्फ्रेड कप्तान के निकट आये, और

उनसे बन्दूक लेकर उन्हे भी उस्पार जाने के लिये कहा। कप्तान साहब भी अबकी कुशलता पूर्वक परन्तु डरते हुये उस्पार पहुँच गये; कारण यह कि पकड़ने के लिये अबकी पुल के दोनों ओर दो रस्से लगा दिये गये थे।

सर विल्फ्रेड—हेक्टर, आओ इन पाजियों के रोको, हाँ! अबकी इनके बीच में तो एक बाढ़ पड़े। तुम्हारी गोलियां भी ईश्वर की कृपा से कैसी अच्छी निशाने पर जाती हैं।

सर विल्फ्रेड [illegible] बातों ने हेक्टर के दिल को और भी उभाड़ दिया। [illegible] ने मिल कर एक के उपरान्त दूसरी, कई बाढ़ जो उनपर [illegible] चलाई तो उनकी पूरी आगे की सतर की सतर पृथ्वी पर [illegible] पड़ने लगी। वास्तव में यदि इतनी मुस्तैदी न काम में लाई [illegible] जाती तो उस आगे की सतर का रोकना कठिन था और फिर [illegible] बेचारों की जो अवस्था होती जो इस्समय पुल पर से उतर रहे थे, उसे पाठक स्वयं बिचार लें।

[illegible] के उपरान्त सर विल्फ्रेड ने जो गरदन फेरी तो देखा कि [illegible] साहब उस पार पहुँच गये हैं। अब केवल [illegible] हेक्टर इस पार रह गये थे, जिन्हें वे जंगली [illegible] कर खा जाना चाहते थे।

[illegible] हेक्टर! अब तुम भी बन्दूक अपनी पीठ पर [illegible] उसपार निकल जाओ; और जैसेही वहाँ प- [illegible] जङ्गलियों को बन्दूक से रोकना प्रारम्भ करना।

फिर जबलों कि मैं तुमतक न पहुँच जाऊँ मेरी प्राण रक्षा तुम्हारे हाथ है।

यह सुनकर जैसेही हेक्टर; पुल के पार होने लगा वैसेही सर विल्फ्रेड एक बड़ी चट्टान के पीछे आ गये और वहाँ से गोलियाँ मरनी प्रारम्भ कीं। उधर उन देवों ने उस बीर पुरुष को अकेला पाकर, बड़े बेग से धावा किया, और यहाँ तक लपकते हुये आगे बढे कि केवल ६ गज़ का अन्तर उन से और सर विल्फ्रेड की बन्दूक से रह गया, कि इतने में एक हर्षनाद उस्पार से सुन पड़ा "चले आओ सर विल्फ्रेड! मैं उनके लिये प्रस्तुत हूं!"

अन्तिम गोली मारकर सर विल्फ्रेड ने बन्दूक अपने कन्धे पर डाली और फिर तुरन्त पुल पर पैर रक्खा, और साथही इनके पीछे एक भयानक कोलाहल के साथ लगभग छः जङ्गलियों ने धावा बोल दिया।

"दाँय! दाँय!" साथही हेक्टर ने दो फैर कीं, और वहाँ ६ राक्षसों में केवल चारही रह गये, जो पुल के निकट आपहुँचे। उनमें से भी दो ने जैसेही घबड़ाकर पुल पर चढ़ना चाहा वैसेही पैर फिसले और वे लुढकते हुये खाई में चले गये; बाकी के दो, बड़ी सावधानी से सर विल्फ्रेड के पकड़ने के लिये पुल पर चढ़ गये।

यह समय बड़ाही कठिन तथा भयानक था। क्योंकि हेक्टर इस भय के मारे बन्दूक नहीं दाग सकता था कि कहीं गोली

सर विल्फ्रेड को, जो पुल के सामनेही थे न लग जावे; और यही कारण उन हबशियों के बढ़ने का था, जिसका परिणाम एक व्यक्ति की जान जाने पर था।

इतने में पुल पर के एक जङ्गली ने सर विल्फ्रेड पर एक बर्छा खींच ही तो मारा, जो ईश्वर की कृपा से उनकी बगल से होता हुआ उनके साथियों के बीच में जा गिरा। बर्छा के गिरतेही सर विल्फ्रेड के साथी जो यथार्थ में निहत्थे थे हेक्टर के अति-रिक्त सब वहां से भागकर दूर जा खड़े हुये।

अन्त सर विल्फ्रेड उस पार पहुँच गये, और कूदकर
चट्टान पर जा खड़े हुये। हेक्टर जो उनके निक
था, उन दोनों जङ्गलियों को मार गिराने के निमि
परन्तु साथही एक तीर ऐसा उसकी बाँह पर
वह उलट कर वहीं गिर पड़ा और उसके
गई। सर विल्फ्रेड ने उसकी इस अवस्
उन दोनों जङ्गलियोंही से सूचित हुये
तर कर अब इनके बिलकुल निकट
अपने पञ्जों में दबाया चाहते थे।

जङ्गलियों ने जैसेही उन
वह फुर्तीला व्यक्ति कूदकर
तो अब समयही न था परन्
में आ सकता था, जिसे उ
लगाया और वह लुढ़क

ल्फ्रेड अब उसी तरह बन्दूक ताने हुये उस दूसरे जङ्गली के ओर फिरे, परन्तु वह दूसरा दुष्ट एक विष का बुझाया लम्बा छुरा तान कर खड़ा हो गया।

सर विल्फ्रेड ने इसके पहिले ऐसा भयानक समय कभी नहीं देखा था। उस भयानक छुरे का निशाना सर विल्फ्रेड का हृदय बँध चुका था: और जबसे बन्दूक का कुन्दा सर विल्फ्रेड अपने काम में लावें २ तब से वह निर्दई छुरा इनको समाप्त करने के लिये छुट पड़ा; और उसी क्षण में जिसमें कि वह इ-
ओर बढ़ा था, इनके जीवन का अन्त करही देता कि
डेन सहसा एक और से टूट पड़े और अपने को सर
मने खड़ा कर दिया। वही जल्लाद छुरा जो
त्या करने को था राल्फ हाल्डेन की छाती पर
चीरता हुआ घुस गया।

गिरनेही को थे परन्तु सर विल्फ्रेड ने
सँभाला! इतने में हेक्टर ने, जो स-
को दबाकर एक छूरे से पुल की
काट डालीं!

ड़ेही प्रसन्न हो २ कर, इसपार
ी पर पैर रक्खें, कि इतने में
चे गिर पड़े, और क्षण के
हुये जल ने दबा दिया।

अब उसपार के जङ्गली निराश हो हो कर चिल्लाने लगे और उधर वह जङ्गली जिसने कि सर विल्फ्रेड को छूरा मारा था तुरन्त सर विल्फ्रेड की बन्दूक से मारा गया। हाल्डेन को उनके साथी पकड़े हुये एक ओर ले चले।

जैसेही ये लोग हाल्डेन को लेकर आगे बढ़े वैसेही एक बौछार तीर और बर्छों की इन लोगों पर आई! परन्तु इससे इनकी कुछ हानि न हुई और ये हाल्डेन को लिये हुये उस सूखे बृक्ष के निकट आये जिसकी डालियों से कि कुछ दिन पहले, लकड़ियाँ लेकर आग जलाई गई थी।

हाल्डेन को इन लोगों ने वहीं लिटा दिया और चुपचाप उनके चारों ओर खड़े हो गये। उनकी आँखें पथरा गई थीं, दम; रुक २ के आता था और उनकी छाती गहरे लाल रङ्ग से रँगी हुई थी।

सर विल्फ्रेड उनकी यह अवस्था देखकर बड़ीही बिकलता से बिलाप करने और यह कहने लगे "हाय! बेचारे ने केवल हमारे लिये अपने प्राण त्यागे।"

हेक्टर; अपने मरते हुये पिता के बगल [illegible] बैठ गया और चिल्लाकर कहने लगा "[illegible] कुछ बातें तो की[illegible]

राल्फ हाल्डे[illegible] पहले तो उन्होंने स[illegible] देर तक हेक्टर की ओ[illegible] में बोले "ईश्वर! मुझे[illegible] म्हारा पिता नहीं हूं[illegible]

चालीसवाँ बयान ।

राल्फ हाल्डेन की बात से सब चौंक पड़े और वे सब बड़ेही उत्सुकता से उनकी बातें सुनने को झुके ।

हेक्टर—आप मेरे पिता नहीं हैं तो फिर मेरे पिता कौन हैं? शीघ्र बतलाइये!

हां—प्यारे; तुम्हारा नाम आर्थर केवेन्ट्री है और सर विल्फ्रेड कोवेन्ट्री तुम्हारे पिता हैं ।

यह सुन्तेही अर्ल जोर से चिल्लाकर आगे बढ़ा, जिससे कुल गुफा गूंज गई और उन्होंने हेक्टर को जोर से पकड़कर अपनी ओर खींच लिया और स्वयं मरते हुये मनुष्य के निकट पहुंचकर बड़ेही क्रोध और विचित्र रूप से पूछा "तुम कौन हो?"

इसपर राल्फ हाल्डेन ने एक भयभीत दृष्टि सर विल्फ्रेड के चेहरे पर डाली और धीरे २ कहने लगे "मैं वर्न कोवेन्ट्री तुम्हारा भाई हूं, मैंने एक बड़ा भारी दोष तुम्हारा किया है, जिसके बदले में मैं; प्राण का बदला देकर तुमसे क्षमा का प्रार्थी हूं ।"

[illegible] सुन्तेही सर विल्फ्रेड के चेहरे पर अनेक भाव [illegible] ; जो निकटही [illegible] ना प्रारम्भ किया। [illegible] आज बीस वर्ष के [illegible] आर्थर प्यारे आर्थर! [illegible] इसके पहले मैं अन्धा [illegible] अब किसी जाँच की

भी आवश्यक्ता नहीं है ! मेरे बीर ! बुद्धिमान ! और शीलवान पुत्र, मैं तुम्हारा पिता हूं ।

हेक्टर—और इसकी गवाही भी मेरेही पास है ।

यह कहकर उसने अपने गले का वही यन्त्र तोड़कर सर विल्फ्रेड के हाथ में दे दिया, जिसे उन्होंने एक कमानी के खटके से खोलकर देखा ।

सर—तुम्हारी स्वर्गबासी माता ! आर्थर ! यह यंत्र तुम्हारी गर्दन में था जब तुम चोरी गये थे और तुम्हारेही दुःख में तुम्हारी माता ने प्राण त्यागे । और तुम्हारा चोरानेवाला "यह कहकर भयानक रूप से सर विल्फ्रेड ने उस मरते हुये व्यक्ति की ओर उँगली उठाई ।"

हा—मैं सचमुच दोषी हूं ! परन्तु उसका बोझ भी मैंने भली भाँति उतार दिया । इसके पहिले कि मैं लन्दन छोड़ूं मैंने इस बारे में एक पत्र भी राबर्ट सुडामोर को लिख दिया था ।

हेक्टर—आप के बर्बादी के समाचार मिलने के पहलेही वह अग्नि में भस्म हो चुका था ।

हा—(मरते २) मेरा अब चल चलाव है ! विल्फ्रेड ! क्या ऐसी अवस्था में भी तुम मुझे एक ऐसा दयामय शब्द नहीं सुनाया चाहते जिससे मेरे प्राण के निकलने में कष्ट न हो ?

सर विल्फ्रेड ने यह सुनकर अपने उस भाई के ओर से जिसने इनका कुल [illegible] वनही व्यर्थ कर दिया था, मुंह फेर लिया । इसपर हेक्टर ने [illegible] विल्फ्रेड से धीरे २ कहना प्रारम्भ किया

"उन्होंने अपना जीवन देके आप के प्राण बचाये, इससे बढ़कर उनके दोषका परिशोध और क्या हो सकता है"।

इन शब्दों ने सर विल्फ्रेड के चित्त पर जाकर बड़ा काम किया और उन्होंने उस नये मिले हुये पुत्र की बातों को तुरन्त स्वीकार कर लिया। वह मरते हुये मनुष्य के सिरहाने बैठ गये और उनका सिर अपनी गोद में लेकर कहने लगे "ईश्वर साक्षी है वर्न! मैंने तुम्हारे सब अपराधों को क्षमा किया, इस क्षण से मैंने तुम्हारी कुल पिछली बातें चित्त से भुलादीं, और अब मैं भविष्य में तुम्हें वैसेही प्रेम से याद किया करूँगा जैसा कि मैं लड़कपन में तुम्हें याद किया करता था। वर्न अब मुझसे भी कुछ बोलो!"

एक प्रसन्नता की चमक मरनेवाले के नेत्रों से निकलने लगी और उसके होठों पर एक सूक्ष्म मुस्कराहट झलकने लगी।

हा—(बहुतही धीरे) धन्य ईश्वर! प्यारे विल्फ्रेड बन्दगी।

इसके उपरान्तही उन्होंने दाहिना हाथ बढ़ाकर उस भयानक छूरे को अपनी छाती में से निकाल लिया जिसके साथही रक्त का फौवारः छाती से छूटने लगा और उसी रक्त के साथही साथ वर्न कोवेन्ट्री की आत्मा शरीर से अलग हो गई।

सर विल्फ्रेड उस मरते हुये व्यक्ति [illegible] सिरहाने बैठे एक [illegible]श्वरीय प्रार्थना कर रहे थे, और उनके सा[illegible]ुरदे के चारोओर [illegible]रर खोले अदब से झुके हुये थे।

साथही गुफा के ऊपर से सूर्यदेव की एक किरन मुर्दे के चेहरे पर पड़ी जिससे कि वह चमकने लगा।

*   *   *   *   *   *   *

सर विल्फ्रेड बड़ी देर तक मारे दुःख के वहीं बैठे रहे अन्त कुछ देर के उपरान्त भाई का सिर अपने जंघे पर से हटाया और उठ खड़े हुये।

सर०—मेरे बेटे आर्थर ! और मेरे साथियों ! एक बात और बाक़ी रह गई है उसे सुनो, मैं जिस बात को कहूंगा वह अपने भाई के द्वेष के कारण नहीं वरन् केवल आप लोगों को उससे सूचित करने के लिये; क्योंकि मैं अपने भाई का दोष तो क्षमा कर चुका हूं। वरनूकवेन्ट्री जो आप लोगों के सामने पड़े हैं मुझसे बयस में दो वर्ष के छोटे थे। हमारे पिता वरनूकवेन्ट्री विल्टशायर के अधिपति, [और जहां हमलोगों की जन्म भूमि भी है] उस्समय स्वर्ग लोक को सिधारे जब हमारा बयस सत्ताइस वर्ष का था। उनके भी पूर्व हमारी माता का स्वर्गबास हो चुका था।

इस लिये कि ज्येष्ट पुत्र मैंही था, कुल सम्पत्ति [illegible]
मेरेह[illegible] हाथ आई; और इस घटना के तीन वर्ष [illegible]
एक बड़ीही स्वरूपवती बाला के साथ व्याह [illegible]
की सौगन्ध मुझे यह तनिक भी मालूम [illegible]
उ[illegible] स्त्री को निराशा से चाहता है. [illegible]

की माँ वर्न से बात तक न करती थी इसी लिये उस्से वह निराश हो चुका था । अस्तु ! मेरे व्याह को देख कर भाई के चित्त में द्वेष की आग बल उठी और उसने कुछ रुपये पैसे पर व्यर्थ लड़ाई उठानी चाही परन्तु मैंने उसे अपने शान्त स्वभाव से उड़ा दिया ।

वर्न; स्वभाव का बड़ाही क्रोधी था और उसने तुरन्त मुझसे बदला लेने की ठान ली । इसे वह अपने चित्त में बहुत दिनों तक छिपाये रहा और समय की प्रतीक्षा करता रहा अन्त वह मेरा एक छोटा बेटा चोरा कर ले भागा जिस्का बयस अभी केवल तीनही वर्ष का था और लाख २ ढुंढ़ाई होने पर भी उसका पता न चला ।

इसी दुखः ने मेरी स्त्री के भी प्राण लिये और यही दोनों दुःख कुछ ऐसे मुझ पर भी आ पड़े जिस्से मुझे घर बार छोड़ कर लाचार केवल चित्त बहलाने के लिये देश २ मारा २ फिरना पड़ा परन्तु आज बीस वर्ष के उपरान्त उस मेरे दुख का अन्त हुआ और मैंने बर्न अपने भाई से; अपने प्यारे पुत्र को [illegible] पाया ।

[illegible] र सुनियेगा ! यहां एक ऐसा व्यक्ति भी उप[illegible]यत [illegible] भेदों को भली भांति जानता है ।

[illegible] होंने फिलिप की ओर ऊँगली उठाई तो [illegible] और काँपने लगा ।

कप्तान—समझे न भई सर विल्फ्रेड ! अजी इसने किसी तरह हेक्टर के पास का वह जन्त्र देख लिया था और फिर इनका बैरी हो गया।

सर विल्फ्रेड—(कंपित स्वर में) सचमुच फिलिप हमारी स्त्री के कुल भेदों को जानता था। अच्छा आर्थर ! तुम इसबारे में क्या जानते हो तनिक स्पष्ट रूप से तो कहो।

यह सुन कर हेक्टर या आर्थर ने जो कुछ बात थी वह स्पष्ट रूप से एक २ अक्षर सर विल्फ्रेड से कह सुनाई, जिसे सुन कर फिलिप काँपने लगा और अन्त रोता हुआ, सर विल्फ्रेड के चरणों पर जा पड़ा। उधर सर विल्फ्रेड मानों अपने आपे से बाहर हो गये थे, उनके नेत्रों से चिनगारियाँ निकल रही थीं और वह तड़प कर कहने लगे "हे परमेश्वर ! क्या ऐसे दुष्ट भी पृथिवी पर हैं ! अरे तूने जान बूझ कर अपने मित्र को राक्षसों के हवाले कर दिया। और फिर यह जान कर कि हेक्टर मेरेही हृदय का टुकड़ा है ? तू इस लिये उसका प्राण लेना चाहता था कि जिस में कुल सम्पत्ति का मेरे उपरान्त तूही सत्वाधिकारी हो। तू मेरा कोई सम्बन्धी नहीं, मैं केवल तुझे इस निमित्त चाहता था कि मरने पर कोई अपना नाम लेने वाला पीछे छोड़ जाऊँगा। अरे नीच ! यह मुर्दा आदमी उतने बड़े दोष का दोषी नहीं है जितने का, कि तू ! मुझे मुँह न देखा ! मुझसे कभी न बोलना मैं तेरे मुंह के देखने से महा पाप समझता हूं। बस चल हट दूर हो।

यह सर विल्फ्रेड ने कुछ ऐसे क्रोध मय शब्दों में कहा कि फिलिप को फिर कुछ विशेष दिखलावा दिखलाने का साहस न पड़ा और वह दूर जा खड़ा हुवा।

सर विल्फ्रेड—अब तुम लोग आगे बढ़ने के लिये तैयार रहो तबसे मैं वहां से बन्दूकें उठाये लाता हूँ।

यह कहकर सर विल्फ्रेड फिर खाई पर आये, राक्षस लाचार होकर लौट गये थे। सर विल्फ्रेड ने तुरन्त अपनी बन्दूकें उठाईं और अपने साथियों में जा मिले। ऊपर लिखी घटना के उपस्थित होने के कारण आर्थर अपनी बाँह का दर्द बिलकुल भूल गया; और फिर यह घाव भी कुछ विशेष न था। तीर केवल माँस को चीरता हुवा निकल गया था जिसे कसके बाँध देनेही से दर्द में बहुत कुछ कमी हो गई।

कप्तान जोली तथा सर विल्फ्रेड मिल कर वर्न की लाश ले चले। बीच बीच में टौंक तथा चेको भी उनका कन्धा बदलवा देते थे। योंही सूर्य के अस्त होने के पहलेही ये लोग गुफा के बाहर जा खड़े हुये।

इनलोगों ने यहाँ आकर एक नाले के किनारे अपना डेरा डाला। सर विल्फ्रेड जाकर कहीं से एक मोटा जानवर मार लाये जिसे सब ने भून कर खाया; और रातभर वहीं बारी २ सोये।

प्रातः काल होतेही पहाडी के बगल में कबर खोदी गई और वर्न कोवेन्ट्री उसमें दफन किये गये। इनकी कबर पर एक बड़ा पत्थर भी खड़ा कर दिया गया।

तीन दिवस के उपरान्त वे थके माँदे पथिक नगर लीवा में पहुँचे और बसूरियों में रह कर कुछ श्रम मिटाने लगे। जिन्हें कभी स्वप्न में भी यह अनुमान न हुवा होगा कि वेही पथिक फिर उनके मेहमान होंगे।

इकतालीसवाँ बयान।

अब हम अपने पाठकगण की आज्ञा से, समय का कुछ भाग छोड़ कर एक दम आगे बढ़ जाते हैं और २३ जनवरी सन् १८९० के प्रातः काल को, शाह कासाँगों की राजधानी में शेड झील के पूर्वीय किनारे पर पहुँचते हैं।

एक खुले हुये मैदान में, जो ठीक राजधानी के बीचों बीच है, और जहां से सर विल्फ्रेड इत्यादि एक बेर प्राण लेकर भागे थे, सर विल्फ्रेड कोवेन्ट्री, आर्थर, कप्तान जोली, दुष्ट फिलिप तथा चेको खड़े हैं, केवल टौंक अनुपस्थित था। इन लोगों के सिरों के ऊपर, बीस फीठ की ऊँचाई में एक गुब्बारा अपनी पूरी मोटाई में फूला हुवा वायु में हिल रहा था, गुब्बारा चारों ओर से रस्सियों में जकड़ा हुआ था।

कैसे यह भागे हुये मनुष्य इनलोगों में फिर आये— [illegible] उस बेजान गुब्बारे में भगा ले जानेवाली [illegible] —इस्का बृत्तान्त सुनिये।

भागनेवालों ने [illegible]गर लीवा में दस [illegible]

जिस्की इन्हें बड़ीही आवश्यकता थी। आर्थर का घाव भी इतने दिनों में अच्छा हो गया, तब ये लोग एक दूर के भ्रमण के निमित्त प्रस्तुत हुये। उन्हेंने बड़ेही जोश से टौंक और उसके पिता, तथा अन्यान्य मित्रों को धन्यबाद दियाः और फिर वे लोग शेरी नदी से एक दृढ़ केनिउ (डोंगी) पर सवार होकर चले। चलने के पूर्व उनलोगों ने दोनों बन्दूकें और कुछ भोजन इत्यादि की भी सामग्री रख ली थी।

शेरी के उत्तम बहाव ने इनलोगों को लगभग दो सप्ताह में शेड झील पर्यंत पहुँचा दिया, रास्ते में कोई ऐसी मनोरञ्जक घटना नहीं हुई जिसका उल्लेख यहां किया जावे।

सर विल्फ्रेड ने अनुमान किया था कि शेड तक पहुँच कर फिर हम लोग डोंगीं छोड़ देंगे और अफ्रिका की मंजिलें पैरों से चल कर समाप्त करेंगे, परन्तु उसी समय कुछ ऐसी बातें अकस्मात हो गईं कि जिस में इन्हें अपना बिचार बदलना पड़ा।

उन्हें वहां एक झुण्ड बुदमा का, जिसका सरदार राजकुमार आग्गा था मिल गया, जो निकटही के गाँव में किसी प्रयोजन से गया था।

राजकुमार आग्गा इनसे मिल कर बड़ाही प्रसन्न हुवा, और ...ही अपूर्व सुसमाचार सर विल्फ्रेड को सुनाया, उसने कहा ... आ[illegible] लोगों की बाट जोह रहे हैं कि सुफेद म... ...ारा ले जावें और यही इच्छा बुदमा जाति ...ा सुनिये कि हम [illegible]ोगों की जाति में

भयानक रोग फैला, और जब अन्य जाति के जादूगर तथा डाक्टर आये तो उन्होंने दवा बताने के अतिरिक्त यह भी कहा कि यह उन्हीं सुफेद मनुष्यों के सताने का फल है और जब वे पुनः लौट कर आवेंगे और अपने हवाई बिमान पर चढ़ कर यहाँ से चले जायँगे तो कुल आपत्तियाँ इस नगर की दूर हो जायँगी। प्रिंस आग्गा ने यह भी कहा कि आप लोगों का गुब्बारा बड़ेही सुरक्षित स्थान में रक्खा हुआ है।

यह कहानी कुछ ऐसे सच्चे ढङ्ग से कही गई कि सर वि-ल्फ्रेड को तुरन्त बिश्वास हो गया और वे बुदमा के साथ हो लिये। गाँव में पहुंचतेही शाह कासांगो तथा उस्की प्रजा ने एक सच्चे प्रेम तथा उत्साह से इनका स्वागत किया।

अब सर विल्फ्रेड को अपनी बुद्धि पर जोर देने का समय आया। उन्हें यह भली भांति मालूम था कि प्राचीन काल में गुब्बारा ऊन तथा अन्य बस्तुओं की निकली हुई गेस से भरा जाता था। तात्पर्य यह कि सर विल्फ्रेड ने देख भाल और सोच बिचार कर एक बात निश्चय की और अपने उस बिचार को शाह काशाङ्गो से कह सुनाया। उन्होंने शाह से एक प्रकार की घास और खजूर का तेल जितना मिलना सम्भव हो मँगाने की प्रार्थना की। वहां तो आज्ञा की देर थी, चौबीस घण्टे के भीतर २ उन जङ्ग-लियों ने एक ढेर घास का और कई सौ मन तेल उसी मैदान में लाकर एकत्रित कर दिया।

अब गुब्बारा [illegible] से निकाला गया और उस्के

स्थान पर सर विल्फ्रेड ने अपने कोट का टुकड़ा लगा दिया । खटोलना इत्यादि से भी यह दुरुस्त करा के २२वीं की प्रातःकाल को, एक खुले स्थान में वृक्षों के बीच बांध कर खड़ा किया गया।

अब एक बड़ा पत्थर का टाँका तेल से भर कर रक्खा गया और उस्में वही घास जला जलाकर डाली जाने लगी जिस्में से एक प्रकार का धुंवा निकलने लगा। गुब्बारा बिलकुल नीचा कर दिया गया था और उस्का मुंह उसी टाँके पर खोल कर रक्खा गया जिसमें गेस भरी जाने लगी । यह सब काम सर विल्फ्रेड ने अपने हाथोंही से करना प्रारम्भ किया ! और अब धीरे २ गुब्बारे का बड़ा शरीर फूलने लगा ।

तमाम रात सर विल्फ्रेड उस घास से तेल को भड़काते रहे जिससे गेस उत्पन्न हो होकर गुब्बारे में भरी जाती थी । एक ओर तो यह हो रहा था और दूसरे ओर वे जंगली आग के सामने नाच रहे थे और रातभर वहां बड़ाही कोलाहल मचा रहा ।

२३ की सुबह भी बड़ेही आनन्द की सुबह थी, बुदमा तथा अंगरेज दोनोंही प्रसन्न हो रहे थे और गुब्बारा गेस से पूरा भर कर उड़ने के लिये फड़फड़ा रहा था ।

[illegible]यालीसवाँ बयान ।

[illegible]र विल्फ्रेड का काम समा[illegible] । खटोलने में कुछ

खाने की सामग्री, दो बन्दूकें और बहुत सा पानी रक्खा गया। वायु इस समय शीघ्रता से पूरब और उत्तर दिशा के ओर बह रही थी यह देख कर सर विल्फ्रेड ने अपने साथियों से कहा "भाइयो! ऐसा समय फिर हमारे हाथ न आयेगा अब हम लोग बड़ीही शीघ्रता से आगे चल सक्ते हैं।"

अब सर विल्फ्रेड शाह लागोस तथा शाहजादा आग्गा से बड़ेही हर्ष से मिले, और उन हबशियों से भी जो उनके चारों ओर खड़े थे टोपी उतार कर जोर से विदा माँगी जिस्से वे सब चिल्लाने और कूदने लगे। इस्के उपरान्त सर विल्फ्रेड अपने खटोलने में आये जिस्में उनके साथी पहलेही से बैठे उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे। एक क्षण में इशारे पर रस्सी काट दी गई और गुब्बारा झूमता हुवा दो हजार फीट की ऊँचाई पर उड़ गया आर फिर वहीं से पूरब तथा उत्तर के ओर जाने लगा। इनके पीछे अनगिन्ती जङ्गलियों की चिल्लाहट सुन पड़ी।

तमाम दिन और फिर रातभर ये लोग पूरी शीघ्रता [illegible] सनसनाते हुये आगे बढ़े जाते थे। दूसरे दिन प्रातःकाल [illegible] इनलोगों ने देखा कि हम एक बड़े भारी रेगिस्तान पर चले जाते हैं, जिसका नाम अवश्य "सेहरा" था।

गुब्बारे की चाल में कुछ भी फर्क न आ[illegible]ा, [illegible]र वह; और भी दो दिन तथा दो रात योंही उड़ता हुआ अफ्रिका के प[illegible] हो गया।

इन बीच के दिनों में फिलिप; दुष्ट फिलिफ, अपने साथियों से पृथकही रहा और वे भी कुछ इससे बिशेष सम्बन्ध न रखते थे।

शेड झील छोड़ने के चौथे दिनके उपरान्त, गुब्बारे की गेस बिलकुल समाप्त हो गई और वह सों सों करता बालू पर गिर पड़ा, जिसके निकटही अर्बों का एक कारवाँ पड़ा हुआ था।

हमारे बीर पथिकों ने बड़ेही दुःख से अपने हवाई घोड़े को छोड़ा, और उन अर्बों के साथ जा मिले, जिन्होंने इनको अपने साथ वादीये हाफा तक ले चलने का वादा किया। वादीये हाफ यहां से दो सौ मील से कम न रहा होगा। हमारे पथिकों ने उसी ओर, काफिले के साथ कूच किया। अब जो सर विल्फ्रेड ने हिसाब लगाया तो विदित हुआ कि उन लोगों ने [illegible] दिवस में दो हजार मील का भ्रमण; झील शेड से लेकर और यहां तक चार दिनों में तैं किया।

आपत्तियाँ और दुःख अबलों हमारे इस छोटे झुण्ड के भाग्य में लिखे थे, परन्तु वे सब सर विल्फ्रेड की बुद्धिमानी के कारण [illegible] बुरा परिणाम दिखाये बिनाही आगे बढ़ते जाते थे। वे लोग [illegible] ईल नामी नगर में दो सप्ताह के उपरान्त पहुंच गये। इन्हें कुछ दिनों यहां पर मुल्ला मेहदी के हाथों में नजरबन्द के भाँति भी रहना पड़ा, अन्त जब सर विल्फ्रेड ने अपनी पूरी सफ़ाई [illegible] और उन लोगों को यह विश्वास हो गया कि ये कोई जासूस नहीं [illegible] सब छोड़ दिये गये। और अब यहां से हमारे पथिकों ने डोंगी पर भ्रमण करना प्रारम्भ किया।